

याकूब 1:16-27

धार्मिक जगत में विभिन्न मुद्दों पर हमेशा बहस होती रही है। हमारा भाईचारा भी इससे अलग नहीं है। हमारे पत्रिकाएँ और पुस्तकें पूजा के उचित तत्वों, सुसमाचार प्रचार के तरीकों और बाइबिल व्याख्या के दृष्टिकोण जैसे विषयों पर उत्साही बहसों से भरी हुई हैं। प्रारंभिक चर्च भी इस प्रकार की समस्याओं से मुक्त नहीं था। उदाहरण के लिए:

- कार्यप्रणाली बनाम जिम्मेदारी: प्रेरितों के काम 6 में भोजन वितरण को लेकर विवाद।
- कृपा का सुसमाचार: प्रेरितों के काम 15 में गैर-यहूदियों को चर्च में स्वीकार करना।
- स्वतंत्रता बनाम परंपरा: 1 कुरिन्थियों में, पूजा में उचित प्रक्रिया के बारे में प्रश्न, और लोगों के खाने-पीने में स्वतंत्रता।

क्या यह परिचित नहीं लगता? हमें चर्च में बहस और विवाद से न तो आश्चर्य होना चाहिए और न ही निराश होना चाहिए, यह हमेशा से रहा है और तब तक रहेगा, "जब परिपूर्ण आ जाएगा, तब आंशिक समाप्त हो जाएगा" (1 कुरिन्थियों 13:8). मेरा विश्वास है कि पौलुस यहाँ केवल वचन के पूर्ण प्रकाशन का ही उल्लेख नहीं कर रहे हैं, बल्कि उस वचन में सब कुछ के पूर्ण सिद्धि का भी। दूसरे शब्दों में, जब परमेश्वर के वचन में प्रकट सब कुछ पूरी तरह परिपक्व हो जाएगा (जैसे मसीह का आगमन), तब हमें वह ज्ञान और समझ प्राप्त होगी जो हमें एक-दूसरे के साथ पूर्ण एकता और सद्भाव में लाएगी। इस बीच, राज्य में अभी भी संघर्ष है, और विभिन्न मुद्दों पर अनेक मतभेद हैं जिनके लिए धैर्य, प्रेम, निरंतर प्रार्थना और अध्ययन की आवश्यकता है ताकि एकता बनी रहे।

हालांकि, इसका यह अर्थ नहीं है कि हम महत्वपूर्ण बिंदुओं के बारे में ठोस निष्कर्ष नहीं निकाल सकते। हम ऐसे अज्ञेयवादी नहीं हैं जो हाथ उठाकर कहें, "यदि हम एक बिंदु पर एक समान राय नहीं रख सकते, तो अन्य पर सहमति बनाने का कोई फायदा नहीं" और फिर इसे अविश्वास की ओर बहने का बहाना बनाएं। यह गैर-जिम्मेदाराना है। याकूब की पूरी पुस्तक इस विचार की गवाही है कि विवादों के बावजूद, हम मसीही धर्म के विभिन्न पहलुओं के बारे में सामान्य समझ तक पहुँच सकते हैं।

जेम्स के पत्र का यह अगला भाग वास्तव में शेष पत्र के लिए स्वर निर्धारित करता है, यह स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है कि किस प्रकार की सोच और व्यवहार यीशु मसीह के शिष्य होने के अर्थ में "मूल बात" है।

ब्रिज – याकूब 1:16-18

अध्याय 1 के पद 16-18 प्रलोभन और पाप की प्रक्रिया के सामान्य चर्चा से उस विशेष विचार और व्यवहार की ओर एक सेतु बनाते हैं जो ईसाई जीवन शैली का सूचक है। याद रखें, हमारा सामान्य विषय यह है कि ईसाई

धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि एक जीवन शैली है, और याकूब इस जीवन शैली को स्पष्ट और निर्विवाद शब्दों में व्यक्त करता है।

सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ।

- याकूब 1:16

एक सरल आज्ञात्मक वाक्य जो कहता है, धोखा मत खाओ और दूसरों को तुमसे झूठ बोलने मत दो। तुम्हें सतर्क रहना चाहिए ताकि तुम भ्रम का शिकार न बनो।

प्रत्येक उत्तम दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म दिया है, नीचे लाए जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से उप्तन्न छाया से कभी बदलता नहीं है।

- याकूब 1:17

ईश्वर अच्छे वस्तुएं भेजता है। यह पिछले पद की ओर संकेत है जहाँ याकूब सिखाता है कि ईश्वर किसी को भी बुराई के लिए प्रलोभित नहीं करता। याकूब कुछ ऐसी बातें बताता है जो विवादित नहीं हैं:

1. कि परमेश्वर अच्छा और पवित्र है, और धर्म में आनंदित होता है, यह एक निश्चित और शाश्वत सिद्धांत है।
2. उसके वादों में कभी कमजोरी या चरित्र परिवर्तन के कारण समझौता नहीं होता (जैसे सितारे अपनी चमक बदलते हैं)।
3. जीवन में बुराई और पाप के लिए परमेश्वर को दोष देना इस बात का संकेत है कि किसी ने झूठ पर विश्वास किया है।

सत्य के सुसंदेश के द्वारा अपनी संतान बनाने के लिए उसने हमें चुना। ताकि हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल सिद्ध हों।

- याकूब 1:18

इसके विपरीत, परमेश्वर की इच्छा बुराई या विनाश के लिए नहीं है, बल्कि भलाई और अनंत जीवन के लिए है। वचन के माध्यम से हम पुनर्जन्म लेते हैं, यह परमेश्वर की इच्छा थी (सुसमाचार प्रचार करना वही है जो लोगों को मसीह तक लाता है)। जिन यहूदियों से याकूब बात कर रहा है वे पहले मसीही थे, इसलिए याकूब उन्हें नए सृष्टि के प्रथम फल (शुरुआती फसल) के रूप में संदर्भित करता है (जो मसीह में विश्वास के द्वारा पुनर्जन्म लेते हैं)।

इस धारणा से धोखा न खाओ कि बुरी इच्छा और आचरण परमेश्वर से आता है या परमेश्वर द्वारा सहन किया जाता है, परमेश्वर अच्छा है और उसने तुम्हें बचाया है ताकि तुम एक अच्छा और पवित्र जीवन जी सको।

ईसाई आचरण में मूल बात – याकूब **1:19-26**

पत्र का शेष भाग एक श्रृंखला है जो स्पष्ट रूप से ईसाई आचरण के संदर्भ में मूल बात को परिभाषित करती है। इस अध्याय में, हम ईसाई जीवन की मुख्य पहचान पर विचार करेंगे: परमेश्वर के वचन के प्रति हमारा दृष्टिकोण।

जेम्स ने उल्लेख किया है कि हमारी प्रारंभिक उत्पत्ति नए प्राणियों के रूप में परमेश्वर के वचन द्वारा हुई थी, जो बीज है जो हमारे भीतर राज्य उत्पन्न करता है। अब वह समझाते हैं कि हम वचन के प्रति कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, यह हमारे ईसाई के रूप में विकास को निर्धारित करेगा। अब तक जेम्स ने जो कहा है उसका सारांश यह है: परमेश्वर अच्छा है, अच्छा भेजता है और चाहता है कि आप अच्छे हों। अच्छा होना आपके दृष्टिकोण (आपका जीवन जीने का तरीका) में देखा जाता है। एक अच्छा दृष्टिकोण इस बात में देखा जाता है कि आप वचन के प्रति कैसे प्रतिक्रिया देते हैं।

सही प्रतिक्रिया के दो मुख्य तत्व होते हैं:

हम जिस तरह सुनते हैं - याकूब **1:19-21**

हे मेरे प्रिय भाईयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता के साथ सुनना चाहिए, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध करने में उतावली मत बरतो।

- याकूब **1:19**

ईश्वर की शक्ति के दृष्टिकोण से हमें उत्सुक होना चाहिए कि हम क्या सुनें जो वह हमसे कहना चाहता है। कुछ लोग क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के लिए उत्सुक होते हैं, लेकिन आत्म-नियंत्रण, आज्ञाकारिता, अच्छे कर्म, दान, निष्ठा, पूजा, बलिदान, अध्ययन, धैर्य आदि के बारे में सुनने के लिए उत्सुक नहीं होते। बोलने में धीमे, उस अर्थ में कि ईश्वर जो हमें कहता है उसके खिलाफ बात करना या विद्रोह करना (शिकायत करना, गुनगुनाना) धीमे होना। वचन जो कहता है उस पर क्रोध करने में धीमे होना। कई बार हम शिक्षक या प्रचारक पर क्रोधित हो जाते हैं क्योंकि वह हमारे पापों को प्रकट करता है और हमें बदलने के लिए बुलाता है। यह क्रोध, हालांकि, वास्तव में वचन के प्रति क्रोध होता है।

क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर की धार्मिकता नहीं उपजती।

- याकूब **1:20**

ईश्वर के प्रति क्रोध में प्रतिक्रिया देना या उसकी इच्छा को शिकायती और गुस्से के साथ पूरा करना उसकी दृष्टि में सही प्रकार के कार्य उत्पन्न नहीं करता। वह चाहता है कि हम भला करें, और भला करने के लिए एक स्वेच्छा और नम्र हृदय रखें। हमें "बड़ा भाई" सिंड्रोम नहीं होना चाहिए (प्रत्यावर्तित पुत्र की दृष्टांत जिसमें बड़ा भाई अपने पिता की दया से जलता है जो उसके भटकते छोटे भाई के प्रति थी - लूका 15:11-32) या "पहले पुत्र" सिंड्रोम (दो पुत्रों की पिता के आदेश पर प्रतिक्रिया की दृष्टांत। पहला पुत्र कहता है कि वह आज्ञाकारी होगा पर अंत में नहीं होता - मत्ती 21:29)।

हर घिनौने आचरण और चारो ओर फैली दुष्टता से दूर रहो। तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गए परमेश्वर के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को उद्धार दिला सकता है।

- याकूब 1:21

जेम्स सुझाव देते हैं कि ईश्वर के वचन के प्रति विरोध और क्रोध का कारण किसी के जीवन में पाप की उपस्थिति है। वह अपने पाठकों से कहते हैं कि उन्हें अपने जीवन से पहले पाप को हटाना होगा ताकि वे अपने हृदय में वचन को प्राप्त कर सकें। नम्रता के साथ वचन को प्राप्त करना इसका अर्थ है कि कोई पाप को हटा रहा है और उसकी जगह वचन को स्वीकार कर रहा है। केवल जब यह किया जाता है तभी वचन व्यक्ति को बचाने और बदलने के लिए प्रवेश कर सकता है। हम बिना पहले पाप को हटाए वचन को सफलतापूर्वक प्राप्त नहीं कर सकते। परमेश्वर अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और वृद्धि करता है, लेकिन पाप को हटाने की जिम्मेदारी हमारी है। कई बार हमारे विश्वास का कमजोर होना और परमेश्वर के लिए रुचि न होना इस कारण होता है कि हमारे जीवन में पाप वचन को प्रवेश करने और हमें पुनर्जीवित करने नहीं देता।

हम कैसे प्रतिक्रिया देते हैं – याकूब 1:22-27

ईसाई जीवन में परमेश्वर के वचन को सही ढंग से सीखना और उस पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देना शामिल है।

परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनों, न कि केवल उसे सुनने वाले। यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो तो तुम अपने आपको छल रहे हो।

- याकूब 1:22

एक और चेतावनी है कि हम स्वयं को यह भ्रमित न करें कि केवल वचन को समझना ही वह आध्यात्मिक परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त है जिसकी हम कामना करते हैं। परमेश्वर के वचन का परिवर्तन और रूपांतरण के लिए प्रभाव तभी होता है जब हम उस पर कार्य करते हैं।

²³ क्योंकि यदि कोई परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। ²⁴ वह स्वयं को अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। ²⁵ किन्तु जो परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और

उसी पर आचरण भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिए धन्य होगा।

- याकूब 1:23-25

जेम्स अपने विचार को समझाने के लिए दर्पण का उदाहरण देता है। एक ऐसा व्यक्ति जो सुनता है लेकिन कर्म नहीं करता, उस व्यक्ति के समान है जो दर्पण में देखता है, कुछ सुधार या परिवर्तन की आवश्यकता देखता है लेकिन कुछ नहीं करता और फिर चला जाता है। दर्पण ने उसकी समस्या को सुधारने में मदद नहीं की और वह अपरिवर्तित रहता है। फिर जेम्स सुसमाचार (स्वतंत्रता का नियम: एक ऐसा नियम जो हमें पाप से मुक्त करता है, न कि सही और अच्छा करने की जिम्मेदारी) को एक दर्पण के रूप में संदर्भित करता है जिसमें व्यक्ति वास्तव में अपने आप को जैसा है वैसा देख सकता है। जो लोग सुनते हैं और कर्म नहीं करते, वे उन लोगों के समान हैं जो दर्पण में अपने आप को देखते हैं लेकिन अपनी उपस्थिति में कुछ भी नहीं बदलते। उनका अनुभव व्यर्थ था, निरर्थक और निष्फल। जो व्यक्ति जो वह देखता है उस पर कर्म करता है, वह अपने कर्मों में धन्य होगा। उसने देखा और बदला, और इसके कारण धन्य हुआ।

²⁶ यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी जीभ पर कस कर लगाम नहीं लगाता तो वह धोखे में है। उसकी भक्ति निरर्थक है। ²⁷ परम पिता परमेश्वर के सामने सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों और विधवाओं की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाए और स्वयं को कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया जाए।

- याकूब 1:26-27

इन अंतिम पदों में याकूब तीन उदाहरण देता है कि दर्पण क्या प्रकट कर सकता है और प्रत्येक के लिए उचित प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए।

1. जीभ का नियंत्रण
2. दयालुता
3. जीवन की पवित्रता

सही प्रतिक्रिया तब होती है जब कोई व्यक्ति, वचन सुनने के बाद, और यह देखकर कि गपशप, अशिष्ट भाषा, निंदा, झूठ या घमंड उसके जीवन का हिस्सा हैं, यह समझता है कि परिवर्तन होना चाहिए और वह परिवर्तन करता है। या, यदि वचन सुनने के बाद, और यह देखकर कि उसके अच्छे कार्यों की मात्रा या गुणवत्ता में सुधार या वृद्धि की आवश्यकता है, आवश्यक परिवर्तन करता है। और, यदि वचन सुनने के बाद यह पहचानता है कि उसका जीवन बहुत अधिक सांसारिक है और परमेश्वर के राज्य के प्रति बहुत कम चिंतित है, तो वह ऐसे परिवर्तन करता है जो इस दृष्टिकोण को सुधारेंगे।

ईसाई धर्म में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर का वचन न केवल हमें उद्धार तक ले जाने की शक्ति रखता है, बल्कि हमें रूपांतरित भी करता है। यह रूपांतरण केवल तभी संभव है, जब हम उत्साहपूर्वक वह करें जो परमेश्वर हमें करने के लिए कहता है, न कि केवल खुद को धोखा देकर यह सोचें कि केवल बेंच पर बैठना ही पर्याप्त है।